शांति

कभी जिंदगी बस यूँ ही शांत रहने को कहती है,
शायद शांत होकर हर एक लम्हों को जीना चाहती है।

शांत होकर .... मन सोचता है ....,
हाँ शांति, बंजारों की बस्ती में मिलने वाली शांति।
नंगे पैरों से चलने वाली शांति,
ममता की गोद में सर रखकर सोने वाली शांति,
नंगधड़क बच्चों के आपस में लड़ने आपस में
मिलने वाली शांति,

या, शायद जोर दार तमाचे के बाद मिलने वाली
स्नेह की शांति,

हाँ शांति, बस शांति, शांत होकर हर एक लम्हे
को जीने वाली शांति।

लोग अक्सर पंछी बन जाया करते हैं।

कभी जो पंछी बनकर आजाद घुमा करते थे,
वह गलतफहमी का शिकार बन जाया करते हैं।
रंगो की दुनिया में बेशक रंगीन बन जाया करते हैं,
पहनावे, जज्बातों से वह अक्सर आसमान में उड़ जाया करते हैं।

क्या कहे जनाब लोग अक्सर पंछी बन जाया करते हैं।

लोग अक्सर पंछी बन जाया करते हैं,
खुले आँखो से यारी करने को,
बचपन की हर छोटी बड़ी यादो को याद किया करते हैं,
बेशक याद किया करते हैं,

आज जिस दुनिया में जिना वह चाहते, लोग उन्हें गलत समझा करते हैं,

जनाब वह साधारणतः पंछी बन जाया करते हैं।